

NEERAJ®

*New
Syllabus*

Reference Book Based on the Syllabus of

N.I.O.S.-D.El.Ed.

Bridge Course

PDPET

N-523

i k B; ~ p; k z oa k k & v f / x e i z; k
(Curriculum and Teaching-Learning Process)

By : Dr. Archana

Published by:



NEERAJ
PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Sales Office:

1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6

Ph: 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501

E-mail: info@neerajbooks.com

Website: www.neerajbooks.com

(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)

Price: ₹ 120.00

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

Admn. Office : **Delhi-110007**

Sales Office : **1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi-110 006**

E-mail: info@neerajbooks.com Website: www.neerajbooks.com

Typesetting by: *Competent Computers*

Printed at: *Novelty Printer*

Notes:

1. For the best & upto-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.
2. This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board /University.
3. The information and data etc., given in this Book are from the best of the data arranged by the Author, but for the complete and upto-date information and data etc., see the Govt. of India Publications/textbooks recommended by the Board/University.
4. Publisher is not responsible for any omission or error though every care has been taken while preparing, printing, composing and proof reading of the Book. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading etc., are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. If any reader is not satisfied, then he is requested not to buy this book.
5. In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.
6. If anyone finds any mistake or error in this Book, he is requested to inform the Publisher, so that the same could be rectified and he would be provided the rectified Book free of cost.
7. The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.
8. Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" on Websites, Web Portals, Online Shopping Sites, like Amazon, Flipkart, Ebay, Snapdeal, etc., is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.
9. Subject to Delhi Jurisdiction only.

© Reserved with the Publishers only.

Spl. Note: This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.

How to get Books by Post (V.P.P.)?

If you want to Buy NEERAJ BOOKS by Post (V.P.P.), then please order your complete requirement at our Website www.neerajbooks.com. You may also avail the 'Special Discount Offers' prevailing at that Particular Time (Time of Your Order).

To have a look at the Details of the Course, Name of the Books, Printed Price & the Cover Pages (Titles) of our NEERAJ BOOKS You may Visit/Surf our website www.neerajbooks.com.

No Need To Pay In Advance, the Books Shall be Sent to you Through V.P.P. Post Parcel. All The Payment including the Price of the Books & the Postal Charges etc. are to be Paid to the Postman or to your Post Office at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us by Charging some extra M.O. Charges.

We usually dispatch the books nearly within 4-5 days after we receive your order and it takes Nearly 5 days in the postal service to reach your Destination (In total it take atleast 10 days).



NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)

1507, 1st Floor, NAI SARAK, DELHI - 110 006

Ph. 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501

E-mail: info@neerajbooks.com Website: www.neerajbooks.com

विषय-सूची

पाठ्यचर्या एवं शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया (Curriculum and Teaching-Learning Process)

Sample QUESTION PAPER - 1 (Solved) 1-3

Sample QUESTION PAPER - 2 (Solved) 1-3

क्रमांक विवरण पृष्ठ

खण्ड-1 : अधिगम अनुभवों का संवर्द्धन (ENRICHING LEARNING EXPERIENCES)

- | | |
|---|----|
| 1. मूल्यांकन के लिए पाठ्यचर्या का विकास
(Curriculum Development in Evaluation) | 1 |
| 2. शिक्षणशास्त्र में बदलाव
(Paradigm Shifts in Pedagogy) | 12 |
| 3. समकालीन कक्षाकक्ष में अधिगम अनुभवों का आरेखण
(Designing Learning Experiences in Contemporary Classroom) | 24 |
| 4. समावेशी कक्षा-कक्ष का प्रबंधन
(Managing Inclusive Classroom) | 34 |
| 5. शिक्षण-अधिगम का आकलन
(Assessment of Teaching Learning) | 43 |
| 6. ICT द्वारा मध्यस्थ शिक्षण-अधिगम
(ICT Mediated Teaching-Learning) | 54 |

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ
खण्ड-2 : समग्र जीवन का संवर्द्धन (ENRICHING HOLISTIC LIFE)		
7.	समुदाय : एक अधिगम संसाधन के रूप में (Community as a Learning Resource)	62
8.	एक शिक्षण-शास्त्रीय संसाधन के रूप में कला (Art as a Pedagogic Resource)	68
9.	विद्यालयों में स्वास्थ्य एवं सफाई को प्रोन्नत करना (योग, खेल एवं शारीरिक शिक्षा) (Promoting Health & Hygiene in Schools [Sports & Physical Education])	78
खण्ड-3 : विद्यालयों में योग शिक्षा (YOGA EDUCATION IN SCHOOLS)		
10.	विद्यालयी बच्चों के लिए योग की भूमिका का महत्त्व (Role and Importance of Yoga for School Children)	90
11.	योगभ्यास एवं विद्यालयी बच्चों के लिए इसका अनुप्रयोग (Yoga practices and its application for School Children)	96
■ ■		

**Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers**

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER - 1

(Solved)

Based on: National Institute of Open Schooling-D.El.Ed. (BRIDGE COURSE)

पाठ्यचर्या एवं शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया (Curriculum and Teaching-Learning Process)

समय : 3 घंटे]

[पूर्णांक : 70

सामान्य निर्देश: सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

प्रश्न 1. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के प्रमुख स्रोत में शामिल हैं—

- विद्यार्थी
- शिक्षक
- समुदाय
- उपर्युक्त सभी

उत्तर—(iv) उपर्युक्त सभी।

प्रश्न 2. पाठ्यचर्या संचरण के लिए शिक्षक को उचित श्रव्य-दृश्य माध्यमों का चयन करना पड़ता है। इसके लिए शिक्षक को कौन-से कारकों को ध्यान में रखना चाहिए—

- छात्रों की विशेषताएं
- माध्यमों की लागत
- शिक्षण विषय-वस्तु तथा निर्धारित अनुदेशन उद्देश्य।
- उपर्युक्त सभी

उत्तर—(iv) उपर्युक्त सभी।

प्रश्न 3. सक्रिय अधिगम पद्धतियों में शामिल नहीं हैं—

- वार्तालाप
- ब्रेन स्टोर्मिंग
- व्याख्यान देना
- वाद-विवाद

उत्तर—(iii) व्याख्यान देना।

प्रश्न 4. परीक्षणों को मुख्य रूप से किन आधारों पर विभाजित किया जाता है?

- प्रशासन एवं अंकीकरण।
- विश्वसनीयता एवं वैधता।
- अधिगम परिणाम।
- उपर्युक्त सभी।

उत्तर—(iv) उपर्युक्त सभी।

प्रश्न 5. जनसंचार तथा ICT की सामग्री को अधिगम की किस प्रविधि में माना जाता है?

- औपचारिक
- अनौपचारिक
- दोनों
- उपर्युक्त में से कोई भी नहीं।

उत्तर—(ii) अनौपचारिक (जनसंचार व ICT की सामग्री को अनौपचारिक अधिगम प्रविधि माना जाता है, क्योंकि यह अवधि/ पाठ्यक्रम विषय-वस्तु की सीमा में बंधी नहीं होती है।)

प्रश्न 6. प्रतिभाशाली बच्चों का बुद्धि परीक्षाओं में बुद्धि लब्धि स्तर होता है—

- 130+ से 170+ तक
- 100+ से 80+ तक
- उपर्युक्त दोनों
- उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर—(i) 130+ से 170+ तक।

प्रश्न 7. मूल्यांकन शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का महत्त्वपूर्ण अंग है, जो कि निम्नलिखित प्रदर्शन के लिए प्रतिपुष्टि देता है—

- विषय-वस्तु चयन के लिए
- शिक्षण-अधिगम नीतियों के लिए
- छात्र के प्रदर्शन के लिए
- उपर्युक्त सभी

उत्तर—(iv) उपर्युक्त सभी।

प्रश्न 8. शिक्षा-अधिगम में अप्रक्षेपित सहायक सामग्री में आते हैं—

- चॉक बोर्ड
- बुलेटिन बोर्ड तथा मानचित्र

2 / NEERAJ : पाठ्यचर्या एवं शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-D.EI.Ed. (SAMPLE QUESTION PAPER - 1)

(iii) पोस्टर तथा फोटोग्राफ

(iv) उपर्युक्त सभी

उत्तर-(iv) उपर्युक्त सभी।

प्रश्न 9. अधिगम संसाधन के रूप में समुदाय के सदस्यों में आते हैं—

(i) डॉक्टर (ii) शिल्पकार

(iii) किसान (iv) उपर्युक्त सभी

उत्तर-(iv) उपर्युक्त सभी।

प्रश्न 10. भारतीय समाज अपने परंपरागत रूप में किस परिवार प्रथा पर आधारित था?

(i) संयुक्त (ii) एकल

(iii) पुरुष सत्तात्मक (iv) धार्मिक

उत्तर-(i) संयुक्त।

प्रश्न 11. कोलाज किस प्रकार का डिजाइन है?

(i) बहु-आयामी

(ii) त्रि-आयामी

(iii) द्वि-आयामी

(iv) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर-(ii) त्रि-आयामी।

प्रश्न 12. खेल से बच्चों को मिलता है—

(i) धन

(ii) प्रतिष्ठा

(iii) आनंद

(iv) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(iii) आनंद।

प्रश्न 13. बच्चे अपनी भावना की अभिव्यक्ति किसके माध्यम से करते हैं?

(i) वाचन

(ii) बड़बड़ाना

(iii) संगीत

(iv) चित्रांकन

उत्तर-(iv) चित्रांकन।

प्रश्न 14. महर्षि पंतजलि के अनुसार योग का आशय है—

(i) आत्मा से परमात्मा को मिलाने वाली क्रिया

(ii) मन की वृत्तियों को रोकने की क्रिया

(iii) अंधेरे से प्रकाश की ओर लाने की क्रिया

(iv) उपर्युक्त सभी

उत्तर-(ii) मन की वृत्तियों को रोकने की क्रिया।

प्रश्न 15. किस आसन को करने से वृद्धावस्था देर से आती है तथा पाचन तंत्र मजबूत व हृदय स्वस्थ रहता है?

(i) धनुरासन

(ii) चक्रासन

(iii) हलासन

(iv) अनुलोम-विलोम

उत्तर-(ii) चक्रासन।

प्रश्न 16. प्रभावी पाठ्यचर्या के चार महत्वपूर्ण आधार कौन-से हैं ?

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-1, पृष्ठ-7, प्रश्न 3

प्रश्न 17. व्याख्यान पद्धति के दोषों का वर्णन करते हुए उसके निराकरण के उपाय भी बताइए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-2, पृष्ठ-20, प्रश्न 1

प्रश्न 18. स्व-अधिगम इकाई में उद्देश्य महत्वपूर्ण क्यों हैं?

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-2, पृष्ठ-23, प्रश्न 12

प्रश्न 19. प्रश्नोत्तर पद्धति के गुण बताइए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-3, पृष्ठ-32, प्रश्न 13

प्रश्न 20. ओष्ठ पठन तकनीक क्या है?

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-4, पृष्ठ-42, प्रश्न 14

प्रश्न 21. अधिगम का आकलन से क्या तात्पर्य है?

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-5, पृष्ठ-47, प्रश्न 1

प्रश्न 22. अध्यापकों को कम्प्यूटर शिक्षा कार्यक्रमों में सम्मिलित करना क्यों आवश्यक है?

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-6, पृष्ठ-59, प्रश्न 6

प्रश्न 23. घर प्रथम एवं महत्वपूर्ण अधिगम स्थान है। चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-7, पृष्ठ-65, प्रश्न 1

प्रश्न 24. 'उठाना' हस्तप्रयोगी संचलन किसे कहते हैं? इसके मुख्य सोपान क्या हैं?

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-11, पृष्ठ-101, प्रश्न 6

प्रश्न 25. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के क्या स्रोत हैं? पाठ्यचर्या के विषय में परित्याग और नियोजन प्रतिक्रियाओं को क्यों खोजा जाना चाहिए?

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-1, पृष्ठ-9, प्रश्न 10

प्रश्न 26. बच्चों के खेल की प्रमुख विशेषताएं बताइए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-9, पृष्ठ-86, प्रश्न 9

प्रश्न 27. बताइए कि अपनी कक्षा के लिए अधिगम क्रियाकलापों का चयन करते समय आप किन कसौटियों को ध्यान में रखेंगे?

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-3, पृष्ठ-28, प्रश्न 3

प्रश्न 28. शिक्षण-अधिगम के क्षेत्र में ICT की भूमिका पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-6, पृष्ठ-57, प्रश्न 1

प्रश्न 29. अधिगम हेतु आकलन के मुख्य उद्देश्यों को लिखिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-5, पृष्ठ-47, प्रश्न 3

Sample Preview of The Chapter

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

पाठ्यचर्या एवं शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया (Curriculum and Teaching-Learning Process)

खण्ड-1 : अधिगम अनुभवों का संवर्द्धन (ENRICHING LEARNING EXPERIENCES)

मूल्यांकन के लिए पाठ्यचर्या का विकास (Curriculum Development in Evaluation)



अध्याय का विहंगावलोकन

पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम, विषय और पाठ्यपुस्तकें

पाठ्यचर्या का अर्थ-पाठ्यचर्या शिक्षा प्रक्रिया त्रिमुखी स्वरूप का महत्वपूर्ण अंग है। शिक्षा के पूर्व निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए शिक्षक सीखने-सिखाने की परिस्थितियों (Teaching-Learning Situations) का नियोजन करता है। इसमें शिक्षण तकनीक, सामाजिक पर्यावरण आदि शामिल होते हैं, इसलिए सामान्य रूप से इस नियोजित कार्यक्रम को पाठ्यचर्या कहते हैं। इस प्रकार पाठ्यचर्या उद्देश्यों की प्राप्ति का एक साधन मात्र है, परन्तु किसी भी दशा में इसे साध्य नहीं माना जा सकता है।

पाठ्यचर्या का अंग्रेजी भाषान्तर कररिक्जुलम (Curriculum) है। इसे हिन्दी में पाठ्यक्रम या शिक्षाक्रम भी कहते हैं, परन्तु यह सर्वथा सही नहीं है। 'कररिक्जुलम' शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द क्युरेर (Curere) से हुई है, जिसका अर्थ है-दौड़ना। अर्थात् कररिक्जुलम का अर्थ हुआ-दौड़ का मैदान (Race course)। जिस प्रकार एक व्यक्ति दौड़ के मैदान में दौड़कर अपना लक्ष्य प्राप्त करता है, ठीक उसी प्रकार एक निश्चित पाठ्यचर्या को पूरा करके छात्र निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करता है।

पाठ्यचर्या का संकुचित एवं व्यापक अर्थ-पाठ्यचर्या का अर्थ दो अर्थों में लिखा जा सकता है-(1) संकुचित अर्थ (2) व्यापक अर्थ। संकुचित अर्थ में पाठ्यचर्या का अभिप्राय केवल एक पाठ्यक्रम (Syllabus) लिया जाता है। इस मत के अनुसार विभिन्न विषयों के अंतर्गत पढ़ाए जाने वाले विषयों के तथ्यों की सीमा या विस्तार निश्चित कर दिया जाता है। पाठ्यचर्या का निर्माण शिक्षाविद् करते हैं, परन्तु व्यापक अर्थ में पाठ्यचर्या का तात्पर्य उन सभी अनुभवों में लिया जाता है, जिन्हें बालक अपनी रुचियों एवं आवश्यकताओं के अनुसार विभिन्न क्रियाओं द्वारा कक्षा के अन्दर या बाहर प्रतिक्षण प्राप्त करता रहता है।

प्रायः लोग 'पाठ्यक्रम' और 'पाठ्यचर्या' शब्दों का प्रयोग पर्यायवाची शब्द के रूप में करते हैं, परन्तु ये पर्यायवाची शब्द नहीं हैं। इनमें पूर्ण और अंश का अन्तर है। पाठ्यक्रम शिक्षाविद् बनाते हैं जो कि एक कक्षा विशेष में विद्यालय की सीमा में विकसित किये जाते विभिन्न विषयों के ज्ञान की रूपरेखा मात्र होता है अर्थात् किसी स्तर की पाठ्यचर्या का वह भाग, जिसमें उस स्तर के लिए सैद्धान्तिक विषयों के ज्ञान की सीमा निश्चित की जाती है, पाठ्यक्रम (Syllabus) कहलाता है, जबकि पाठ्यचर्या (Curriculum) में नियोजित शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए विद्यालय के अन्दर तथा विद्यालय के बाहर जो कुछ भी नियोजित रूप में किया जाता है, वह शामिल होता है।

विषय-विषय, विषय सामग्री की व्यापक परन्तु तार्किक दृष्टि से संगठित साधन है, जिसकी अपनी विशिष्ट रचना होती है और जो विशेष क्षेत्र के ज्ञान को प्रकट करता है। प्रत्येक विषय संगठन और रचना की दृष्टि से एक-दूसरे से भिन्न होती है। गणित, भौतिकी, रसायन शास्त्र, इतिहास, भूगोल आदि विशिष्ट विषय हैं।

विषय की रचना-विषय की रचना में निम्नलिखित बातें शामिल हैं-

1. अध्ययन की पद्धति (Domain of Study)
2. पूछताछ की विधियाँ (Inquiry Methods)
3. विषय का इतिहास और नियम (History and Rules of Discipline)

पाठ्यचर्या निर्माण पर विषय के स्वरूप का प्रभाव-विषय के स्वरूप का पाठ्यक्रम के निर्माण पर प्रभाव पड़ता है। शिक्षाविदों के शिक्षण की सुविधा के लिए विशेषात्मक ढंग से ज्ञान को विभिन्न विषयों में विभाजित किया है। सीखने की सुविधा एवं उपयोगिता के आधार पर पाठ्यचर्या का निर्माण करते समय उन्हीं विषयों और क्रियाओं को शामिल करना चाहिए जो परस्पर संबंधित हों। विभिन्न विषयों की सामग्री का चयन करते समय भी ऐसी

2 / NEERAJ : पाठ्यचर्या एवं शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया (N.I.O.S.)

सामग्री का चयन करना होगा, जिसे एक-दूसरे के आधार पर पढ़ाया या विकसित किया जा सके। उदाहरण के लिए किसी कक्षा विशेष में सामाजिक अध्ययन के अंतर्गत फलों का महत्त्व बताया जाता है तो विज्ञान के अंतर्गत पौधे या पेड़ के भाग पढ़ाये जा सकते हैं।

शिक्षा प्राप्ति के माध्यम हैं-औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षा। हम जिस वातावरण में रहते हैं, उसका हर एक कारक हमारे ऊपर अपना प्रभाव डालता है, जिससे हम चिंतन शुरू करते हैं और प्रत्यक्षण बनाते हैं। अनौपचारिक रूप में हम जो सीखते हैं उसकी गति काफी धीमी होती है। औपचारिक रूप में हम विद्यालयों/कॉलेजों में शिक्षा प्राप्त करते हैं। यह शिक्षा विभिन्न विषयों की होती है जिनका संगठन पूर्व निर्धारित नीतियों एवं स्थितियों तथा व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखकर किया जाता है। इस संगठित रूप को पाठ्यचर्या कहते हैं। पाठ्यक्रम में शामिल विषयों का ज्ञान कक्षा-कक्ष में दिया जाता है। जिसके लिए शिक्षक को पाठ्यचर्या संरचना के लिए अनेक तैयारियाँ करनी पड़ती हैं।

पाठ्यचर्या संरचना—पाठ्यचर्या किसी भी परिप्रेक्ष्य से निर्मित की गई हो, किंतु उसका उद्देश्य ज्ञान का संचरण कर अधिगम प्रदान करना है। पाठ्यचर्या संरचना इसमें शामिल विषयों, विभिन्न गतिविधियों द्वारा पूरा करने की प्रक्रिया है। पाठ्यचर्या संरचना में शिक्षण स्टाफ द्वारा अभिव्यक्ति, परिकल्पना एवं नियोजन की बहुत जरूरत होती है। इसमें सभी भौतिक, सामग्री, वित्त तथा मानव संसाधनों के प्रभावी एवं कुशल तथा अधिकतम उपयोग की जरूरत होती है।

विषय संबंधी पाठ्यक्रम को संबद्ध पाठ्यपुस्तक में विस्तार से प्रस्तुत किया जाता है। प्रधानाचार्य पाठ्यपुस्तकों द्वारा प्रत्येक विषय के शिक्षण हेतु संबद्ध शिक्षक को उत्तरदायित्व देता है। शिक्षक अपनी योजना बनाकर पाठ्यपुस्तक की सहायता एवं अनेक कौशलों का प्रयोग कर उद्देश्यपूर्ण गतिविधियाँ करता है, जिससे शिक्षण के उद्देश्य/लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके। शिक्षक अनेक पद्धतियों द्वारा पाठ्यपुस्तक की विषय-वस्तु ज्ञान छात्रों तक पहुँचाता है। प्रभावी एवं कुशल पाठ्यचर्या संरचना हेतु गतिविधियों के कुशल संचालन की जरूरत होती है।

अनुदेशन योजना—किसी भी कार्य के उचित एवं इच्छित परिणाम हेतु उसका सही नियोजन होना आवश्यक है। नियोजन से कार्य के लक्ष्य स्पष्ट होते हैं तथा छात्रों का प्रदर्शन भी बेहतर होता है। नियोजन शिक्षक एवं छात्र दोनों को दिशा प्रदान करता है। नियोजन से छात्रों का उद्देश्यों की ध्यान बढ़ता है। साथ ही कक्षा-कक्ष गतिविधियों संबंधी समस्याएं कम हो जाती हैं और अनुशासन बने रहने से रुकावट उत्पन्न नहीं होती। अतः नियोजन प्रबंधन समस्याओं से निपटने का कारगर उपाय है।

विषय-वस्तु संचरण के लिए शिक्षक एवं शिक्षाविद नियोजन का रेखीय मॉडल अपनाते हैं। इसमें प्रथम चरण विषय-वस्तु विश्लेषण होता है। इसी विश्लेषण पर अनुदेशन उद्देश्य निर्मित होते हैं। साधन गतिशीलता तथा विशिष्ट कार्यकलाप उद्देश्यों के लिए विकल्प चुनने में सहायता करते हैं। अच्छे शिक्षा नियोजन में उद्देश्यों

को व्यवहारात्मक, शिक्षण कार्यों एवं रणनीतियों के संदर्भ में देखा जाता है।

नियोजन के तीन स्तर—शिक्षा सत्र के प्रारंभ में ही शिक्षक पाठ्यचर्या नियोजन कर लेते हैं। यह नियोजन तीन स्तरों पर होता है—

1. विषय योजना
2. इकाई योजना
3. पाठ योजना

1. विषय योजना—इस स्तर पर शिक्षक संबंधी पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन करते हैं। इसमें नियोजन में पाठ्यपुस्तक की सभी इकाइयाँ शामिल की जाती हैं। वह सभी इकाइयों के लिए पूरे वर्ष की क्रमिक योजना तय करता है तथा इकाइयों के लिए किए जाने वाले कार्यकलापों की अनुसूची बनाता है। प्रत्येक इकाई के लिए समय निर्धारित करता है। शिक्षक विषय-वस्तु का अवलोकन नहीं करता बल्कि शिक्षण उद्देश्यों एवं लक्ष्यों को भी साथ लेकर चलता है। इसके बाद शिक्षक वार्षिक विषय योजना के अनुरूप विषय-वस्तु की प्रकृति एवं जटिलता का आकलन करते हैं।

2. इकाई योजना—यह विषय योजना का दूसरा स्तर है। इकाई योजना में कुछ दिनों/कालांशों के संदर्भ में विषय की एक या अधिक इकाइयों का चयन कर उनके लिए अनुदेशन उद्देश्य तय किया जाता है। इकाई में शामिल पाठों को समान लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर चुना जाता है।

शिक्षण से पूर्व शिक्षक इकाई की विषय-वस्तु का गहन विश्लेषण करता है। प्रत्येक अध्याय का एक मुख्य शीर्षक होता है, जिसे अनेक उप-शीर्षकों में बाँटा जाता है, जिससे उनकी अंतर्संबद्धता अभिव्यक्त हो सके। विश्लेषण के दौरान शिक्षक मुख्य विचार एवं संबद्ध उप-विचारों को लेकर चलता है तथा विस्तृत व्यौरे को छोड़ देता है। विचार ग्राह्यता की प्रक्रिया में प्रत्येक इकाई में विचारों को एक क्रम में संयोजित किया जाता है जिसे विषय-वस्तु विश्लेषण कहते हैं।

शिक्षक की योग्यता इस बात में है कि इकाई के अनुदेशन के परिणाम के रूप में लक्ष्य/कार्य का विश्लेषण करें। लक्ष्य से अभिप्राय है कि शिक्षक जिस शीर्षक को पढ़ा रहा है, उसके अध्ययन के पश्चात छात्र क्या सीखेंगे। लक्ष्यों को कुशलताओं में बाँटा जा सकता है तथा प्रत्येक कुशलता को अनेक कौशलों में बाँटा जा सकता है। शिक्षक सतत् शिक्षण द्वारा अनेक कौशलों के बाँधित रूप में एक कुशलता प्राप्त कर लेता है। इस कुशलता द्वारा ही वह छात्रों को इकाई योजना के लक्ष्यों को प्रदान करने में सक्षम बनता है।

इकाई योजना में विश्लेषण योग्यता के साथ पाठ्यक्रम संचरण उचित तकनीकी एवं पद्धतियों के चयन की योग्यता भी शामिल है। विषय-वस्तु की प्रकृति एवं उद्देश्यों के प्रकार के अनुसार कौशलों का चयन किया जाता है। इन कौशलों में विषय-शीर्षक, व्याख्या,

उदाहरणों द्वारा स्पष्टीकरण, प्रश्न करना आदि के कौशल शामिल है।

3. **पाठ योजना**—इकाई योजना के समय प्रत्येक पाठ को अनेक उप-इकाइयों में बाँटा जाता है। पाठ योजना में पहली उप-इकाई को लिया जाता है। जिसे 35-40 मिनट के पीरियड में प्रभावी तरीके से पढ़ाया जा सके। एक अच्छी पाठ योजना में कम से कम चार विभाग होते हैं। पहले विभाग में विषय, कक्षा, प्रवेश व्यवहार, सामान्य उद्देश्य, पद्धति आदि की सूचना दी जाती है। परिचय अनुभाग में पहले दिन की विषय-वस्तु का अभ्यास किया जाता है। इससे वर्तमान एवं पूर्व ज्ञान परस्पर जुड़ जाते हैं। अभिव्यक्ति/व्याख्या अनुभाग में नए अधिगम अनुभवों की पद्धतियों एवं माध्यमों का वर्णन होता है। समापन अनुभाग में पढ़ाई गई विषय-वस्तु के सार, पुनरावृत्ति, मूल्यांकन, गृहकार्य तथा ब्लैक बोर्ड कार्य आदि आते हैं।

दैनिक पाठ की योजना—दैनिक पाठ योजना के अंतर्गत निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति से संबंधित तत्त्वों को एक व्यवस्थित क्रम में व्यवस्थित किया जाता है।

दैनिक पाठ योजना के निम्नलिखित पांच भाग होते हैं—

- (i) पाठ के उद्देश्य
- (ii) अनुदेश सामग्री की सूची
- (iii) आरंभिक क्रियाएँ
- (iv) विकासात्मक क्रियाएँ, तथा
- (v) समापन क्रियाएँ।

इन सभी भागों को एक सुव्यवस्थित क्रम में संजोने से पाठ-योजना का निम्नलिखित रूप उभरकर आता है—

विषय..... कक्षा.....

प्रकरण/प्रसंग..... दिनांक.....

1. प्रविष्टि व्यवहार.....
2. प्रकरण के सामान्य उद्देश्य.....
3. कार्यविधियाँ—(i) माध्यम (ii) उपागम
4. प्रस्तावना
5. प्रस्तुतीकरण

- (i) अध्यापन बिंदु
- (ii) विशिष्ट उद्देश्य
- (iii) अधिगम अनुभव
- (iv) आंशिक मूल्यांकन
- (v) अध्यापक संबंधी क्रियाएँ
- (iv) छात्र संबंधी क्रियाएँ

6. पुनरावृत्ति/मूल्यांकन
7. गृहकार्य
8. श्यामपट्ट संबंधी कार्य-योजना।

(i) **सामान्य और विशिष्ट उद्देश्य**—सामान्य और विशिष्ट उद्देश्यों के कथन से हमें इस बात की जानकारी मिलती है कि

अध्यापन के दीर्घकालिक लक्ष्य क्या हैं तथा छात्रों से हमें किस प्रेक्षणीय अन्य व्यवहार की अपेक्षा है।

(ii) **प्राक्कथन**—पाठ-योजना के प्राक्कथन में पिछले अध्याय का सार-संक्षेप दिया जाता है, ताकि छात्र नया अध्याय पढ़ने से पहले पीछे पढ़ाए गए अध्याय की पुनरावृत्ति कर लें। इस प्रकार प्राक्कथन में कहीं गई बातों को पढ़कर छात्र नए विषय के अधिगम के लिए तत्पर हो जाता है। इस प्रकार प्राक्कथन पिछले पाठ में प्राप्त अधिगम अनुभवों और वर्तमान पाठ के माध्यम से प्रापणीय अनुभवों के मध्य सेतु का कार्य करता है। अच्छा प्राक्कथन वह माना जाता है जो अध्येता छात्रों में रुचि उत्पन्न करने वाला हो।

(iii) **प्रस्तुतीकरण**—इसके अंतर्गत संपूर्ण विषयवस्तु को शिक्षण बिंदुओं में क्रमबद्ध कर दिया जाता है तथा प्रत्येक शिक्षण बिंदु संबंधित अध्यापकीय क्रियाओं और छात्र-छात्राओं द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। ऐसा करते समय आंशिक मूल्यांकन भी किया जाता है। अध्यापक को अध्यापन आरम्भ करने तथा संबंधित सामग्री को जुटाने से पूर्व निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

(a) तैयार अध्यापन सामग्री शब्दों में लिखी जानी चाहिए।

(b) यह सामग्री छात्रों के अर्जित कौशल के स्तर के अनुरूप होनी चाहिए तथा वह ऐसी हो जो उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करे।

किसी भी शिक्षण सामग्री के प्रस्तुतीकरण की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि अध्यापक अध्यापन सामग्री का प्रयोग किस प्रकार करता है तथा किस प्रकार की क्रियाएँ छात्रों से करवाता है। अतः प्रस्तुतीकरण की सफलता अध्यापक की कार्यकुशलता पर निर्भर करती है।

पुनरावृत्ति/समापन अंश—इसके अंतर्गत एक बार सम्पूर्ण पाठ का सार बताया जाता है तथा फिर छात्रों से उससे संबंधित प्रश्न पूछे जाते हैं, जिससे अध्यापक को पता चल सके कि छात्रों को पाठ कितना समझ आया है तथा कितने छात्रों को समझ आया है तथा यदि आवश्यकता हो, तो विषय के किसी भाग को पुनः भी समझाया जा सकता है। इसे मूल्यांकन भी कहते हैं।

पाठ्यचर्या के विकास में इसी प्रकार से पाठ्यपुस्तकों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। विषयों के अनुरूप ही पाठ्यपुस्तकों की सामग्री संकलित की जाती है, जिसकी अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं। शिक्षक, छात्र तथा पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर पाठ्य-पुस्तकें तैयार की जाती हैं ताकि वे शिक्षण उद्देश्यों तथा उपलब्धि को प्राप्त करने में पूर्ण रूप में सफलता प्राप्त कर सकें।

पाठ्यचर्या के विकास एवं मूल्यांकन की प्रक्रिया

पाठ्यचर्या विकास एक महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है, जिसमें एक शिक्षक के लिए पाठ्यचर्या की अवधारणा के विषय में स्पष्टीकरण आवश्यक है। उसे सामाजिक उद्देश्यों को छात्रों को प्रदान करने के

4 / NEERAJ : पाठ्यचर्या एवं शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया (N.I.O.S.)

लिए अधिगम अनुभवों को व्यवस्थित करना आवश्यक होता है। पाठ्यचर्या विकास में कई अवस्थाओं और चरणों से गुजरना पड़ता है। शिक्षक के रूप में उसे अधिगम अनुभवों को प्रदान करने के लिए एजेंट की भूमिका निभाता है। इसके लिए उसे पाठ्यचर्या विकास की प्रक्रिया का विस्तृत ज्ञान जरूरी है। इसके द्वारा शिक्षक पाठ्यचर्या को सुविधा से पूरा कर सकता है।

(i) **पाठ्यचर्या विकास के अधिगमकर्ता केन्द्रित उपागम-** पाठ्यचर्या विकास के अधिगमकर्ता केन्द्रित उपाय में सीखने वाले की आवश्यकताओं की ओर ध्यान दिया जाता है। यह अधिगमकर्ता को समाज की वर्तमान समस्याओं को सामना करने के लिए तैयार करता है। इसमें भविष्य की समस्याओं की ओर ध्यान नहीं दिया जाता है। इसमें अधिगम अनुभव अधिगमकर्ता केन्द्रित पाठ्यचर्या के माध्यम से दिया जाता है। यह शिक्षक को छात्रों के विकास और वृद्धि सम्बन्धित बातों को समझने में सहायता करता है।

(ii) **पाठ्यचर्या विकास के विषय-केन्द्रित उपागम-** इसमें पाठ्यचर्या विकास का मुख्य मुद्दा विषय-वस्तु या विषय हो जाता है। अधिगम अनुभवों को चुने हुए विषयों के इर्द-गिर्द संगठित किया जाता है। इसमें अधिगम अनुभव को विषय केन्द्रित पाठ्यचर्या के माध्यम से दिया जाता है। इसकी कार्यप्रणाली में विषय की उपलब्धियों का मूल्यांकन किया जाता है। इसके पश्चात पाठ्यचर्या निर्माता इसको लागू करने का उपाय करता है। इस प्रकार की पाठ्यचर्या का एकमात्र उद्देश्य बालक का बौद्धिक विकास करना है।

पाठ्यचर्या विकास का यह उपागम संकीर्ण धारणा पर आधारित है। इसलिए यह अमनोवैज्ञानिक है, परीक्षा आधारित है। इसमें छात्रों की आवश्यकताओं, रुचियों तथा शिक्षण के अनौपचारिक साधनों की अवहेलना की जाती है। फिर भी इस पाठ्यचर्या का अनुकरण या पालन किया जाता है, क्योंकि इसमें निम्नलिखित लाभ हैं-

(i) इससे व्यावस्थित ज्ञान होता है।

(ii) इसे समझने में आसानी है।

(iii) मूल्यांकन करना सरल है।

पाठ्यचर्या विकास के सन्दर्भ में प्राविधिक और अप्राविधिक प्रत्यय का अर्थ- पाठ्यचर्या विकास के सन्दर्भ में प्राविधिक (Technical) प्रत्यय शिक्षा के उद्देश्यों ओर ध्येय से निकलने वाले ध्येय और उद्देश्यों (पाठ्यचर्या के) को इंगित करता है।

इसके विपरीत अप्राविधिक (Non-technical) प्रत्यय उन व्यक्तिगत आवश्यकताओं पर बल देता है। जो शिक्षा के उद्देश्यों और ध्येयों को बताता है। इस प्रकार पाठ्यचर्या विकास के विषय में निर्णय देना है।

I. प्रमुख प्राविधिक या वैज्ञानिक मॉडल

(1) टायलर मॉडल (The Tyler Model)

(2) टाबा मॉडल (The Taba Model)

(3) गुडलैड मॉडल (The Goodlad Model)

(4) हंकिन्स मॉडल (Hunkins Model)

(5) मीलर और सेलर मॉडल (Miller and Seller Model)

II. प्रमुख अप्राविधिक या अवैज्ञानिक मॉडल

(1) खुली कक्षा-कक्ष मॉडल (The Open Classroom Model)

(2) वीन्सटीन और फैन्टीनी मॉडल (Wiensteen and Fantini's Model)

(3) रोजर मॉडल (Roger's Model)

जब पाठ्यचर्या और उसकी सामग्री का पूर्ण परीक्षण कर लिया है, तो शिक्षकों और प्रशासकों का यह कर्तव्य है कि इसका क्रियान्वयन किया जाये। इसको लागू करने हेतु प्रशिक्षणों, व्यवस्थाओं और सुविधाओं की आवश्यकता होती है। पाठ्यचर्या क्रियान्वयन और कोर्स को लागू करते समय इनका मूल्यांकन आवश्यक है। इसमें निम्नलिखित बातों पर ध्यान दिया जाता है-

(1) **विद्यमान स्थिति-** सभी पाठ्यचर्या क्षेत्रों (Aspects) का पाठ्यचर्या योजना के अनुसार अध्ययन किया जाना चाहिए जिससे इसके लुप्त लक्षणों का पता लगाया जा सके।

(2) **पाठ्यचर्या की प्रभाविता-** पाठ्यचर्या की प्रभाविता जानना महत्वपूर्ण कार्य है। इसमें यही ज्ञात किया जाता है कि पाठ्य योजना में वर्णित उद्देश्यों को प्राप्त करने की क्षमता छात्रों में है या नहीं। इससे सामाजिक व्यवस्था के उद्देश्यों को पाठ्यचर्या में शामिल किया गया है या नहीं ?

यह सम्भव नहीं है कि सभी छात्र शत-प्रतिशत विषय-वस्तु के उद्देश्यों को प्राप्त कर लें, परन्तु एक निश्चित निम्नतम सीमा तक ऐसा होना आवश्यक है। कार्यक्रम की प्रभाविता की निर्णय की सीमा में नियोजकों और पूर्व छात्रों की प्रतिपुष्टि (Feed back) को भी शामिल करना चाहिए। प्रभाविता की जाँच नई पाठ्यचर्या और पूर्व पाठ्यचर्या के माध्यम से भी करनी चाहिए। इसके लिए समयबद्ध कार्यक्रम उचित होता है।

(3) **कार्यक्रम की ग्राह्यता-** पाठ्यचर्या की प्रभाविता जानने के साथ इसकी ग्राह्यता का ज्ञान भी महत्वपूर्ण है। ग्राह्यता से तात्पर्य यह है कि कार्यक्रम के क्रियान्वयन में शामिल लोग इसे पसंद करते हैं या नहीं। इसके लिए छात्रों, शिक्षकों, सुपरवाइजरों और प्रशासकों के विचारों पर भी ध्यान देना चाहिए।

(4) **कार्यक्रम की क्षमता-** पाठ्यचर्या की क्षमता इस बात को दर्शाती है कि उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए पाठ्यचर्या आर्थिक